P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-II, November-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

आदिवासी भील ठाकुर एवं तंग बस्ती की महिलाएँ तथा परिवार नियोजन

नसरीन रहमान शेख
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,
गृह विज्ञान विभाग,
शा0 कन्या महाविद्यालय बड़वानी,
मध्य प्रदेश

आँचल कालखण्डे
प्रवक्ता,
गृह विज्ञान विभाग,
श्रीमती मुखत्यारी देवी टिकैत कन्या महाविद्यालय सिसौली,
मुजफ्फरनगर

सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य आदिवासी भील ठाकुर एवं तंगबस्ती की महिलाओ की परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति पर किया गया। शोध परिणामों से ज्ञात हुआ कि तंग बस्ती की महिलाओं में परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता आदिवासी भील ठाकुर महिलाओ की अपेक्षा सार्थक रूप से धनात्मक है। इस शोध कार्य में दो बालको वाली आदिवासी भील ठाकुर महिलाएँ एवं दो बालको वाली ही तंग बस्ती की महिलाओ में परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करने पर स्पष्ट होता है कि तंग बस्ती की महिलाएँ आदिवासी भील ठाकुर महिलाओं की अपेक्षा परिवार नियोजन के प्रति ज्यादा जागरूक है। उनमें से कुछ महिलाओं ने परिवार नियोजन के साधनों को अपनाया है और परिवार नियोजन केन्द्र से भी सहायता ली है। इस अध्ययन में परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति के अलावा बालकों में स्वीकृति एवं उपेक्षितता को ज्ञात किया गया। उससे स्पष्ट हुआ कि तंगबस्ती के बालकों में ओर आदिवासी भील ठाकुर समाज के बालकों में स्वीकृति की अपेक्षा उपेक्षितता अधिक पायी गयी है।

मुख्य शब्दः परिवार नियोजन, आदिवासी भील ठाकुर महिलाएँ, तंगबस्ती की महिलाएँ, स्वीकृत बालक, उपेक्षित बालक

प्रस्तावना

भारत जातियों ओर सम्प्रदायों के देश के रूप में प्रसिद्ध है। जाति यहाँ की हवा में बसी है। यहाँ की जाति मुसलमान ओर ईसाई भी इसकी छूत से नही बचे है, आदिवासी अपने आप में असीम अनुपम ओर अद्भूत है, वे अपना एक इतिहास संजोए हुए है। इसका उल्लेख करते हुए पुरातन लुप्त प्रायः जातियो की एक झलक सामने आ जाती है। इनकी अपनी विशेषताएँ, संस्कार एवं जीवन शैली है। भील ठाकुर समाज की महिलाओं की स्थिति को देखतें हुए इन्दौर शहर में विकसित हुई तंग बस्ती की महिलाओं की स्थिति भी कुछ इस प्रकार ही है। सामाजिक समस्याओं का सीधा सम्बन्ध जनसंख्या वृद्धि से भी होता है। ये समस्याए समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित करती है। लेकिन जनसंख्या वृद्धि का सबसे ज्यादा प्रभाव निम्न आय वर्ग के लोगो पर पड़ता है।जापान 1974 से निरन्तर अपेक्षाकृत कम जन्म दर प्रदशित कर रहा है और विश्व में कम जनन क्षमता दर वाले देशो में सें एक है Yasuyo Matsumoto and Shingo Yamabe (2013) ने परिवार के आकार का जापानी महिलाओ पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया उन्होने पाया कि वास्तविक बालको की संख्या से परिवार के आकार को प्राथमिकता देने वाली महिलाओं की संख्या अधिक थी, साथ ही युवा महिलाओं में बडे परिवार की गॉव में रहने वाली महिलाओं की अपेक्षा जनन क्षमता के प्रति उत्सुकता कम थी। इसी प्रकार चीन में किए गए एक अध्ययन में देखा गया कि युवाओ की आयु और छोटे परिवार को प्राथमिकता में सम्बन्ध है(Ding QJ, Hesketh,2006) भारत में आज परिवार नियोजन सामाजिक परिवर्तन लाने का सशक्त कार्यक्रम है। आदिवासी वर्ग के विकास हेतु यह नितान्त आवश्यक है जैसा कि यूनाईटेट स्टेट में राष्टीय स्वास्थ्य सांख्यिकीय प्रतिवेदन (2006–2010 Bachrach CAMosher WD,.1996) दर्शाता हैं कि पुरूष और महिलाओ में प्रजनन क्षमता में उत्सुकता जाति व धर्म के अनुसार भिन्न –भिन्न पाये गये। प्रस्तुत अध्ययन भारत के आदिवासी प्रजाति के भील ठाकुर एवं शहर की तंग बस्ती की महिलाओं एवं उनके बालको पर किया गया क्योंकि ये निम्न आय वर्ग के है अतः बच्चों की संख्या अधिक होने के कारण माता–पिता बालको के ऊपर ध्यान नही दे पातें है ओर बालक उपेक्षित हो जाते है। अतः बालको पर इन माता–पिताओ के प्रभाव का अध्ययन

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-II, November-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

कर बालको में स्वीकृत / उपेक्षित भावना का अध्ययन किया गया ।

आदिवासी भील ठाकुर

भिलाला शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए बताया जाता है कि उच्च भील (भील+आला) अथवा सुसंस्कृत भी भिलाले है। ये अपने आप को ठाकुर, भूमिया रावत, पटेल, मुखिया आदि कहकर साधारण भीलो से पृथक मानते है।

तंग बस्ती

तंग बस्तियाँ नगर के बीच में स्थित उन मोहल्लो के रूप में है जो घने बसे हुए है। आधुनिक परिवेश में भी ये लोग सीलन ओर बदबू से भरे एक कमरे में पूरा परिवार निवास करता है।

परिवार नियोजन

आज के युग में परिवार नियोजन सामाजिक परिवर्तन लाने का कार्यक्रम है। छोटे परिवार अधिक बालको वाले परिवारो की अपेक्षा बालको के पालन पोषण पर अधिक ध्यान देते है। माता पिता की अभिवृति का प्रभाव बालक पर पड़ता है। बालक स्वयं को स्वीकृत या उपेक्षित महसूस करने लगता है। बालकों में स्वीकृत या उपेक्षितता के भाव को निश्चित ही परिवार का आकार प्रभावित करता है। अतः माता–पिता और बालको के सम्बन्ध,बालक में स्वीकृति या उपेक्षा का भाव उत्पन्न करते है।

उपेक्षित बालक

उपेक्षित बालक उस व्यक्ति को दर्शाता है, जिसे कि समाजमिति परीक्षण में बहुसंख्या में नाकारात्मक रूप से जाना गया। यद्यपि उपेक्षित बालक समूह का शारारिक सदस्य होता है, परन्तु मनोवैज्ञानिक रूप से वह समूह के सदस्यों के साथ उपेक्षित अनुभव करता है **(आनन्द प्यारी 1975)।**

उद्देश्य

1. आदिवासी भील ठाकुर महिलाओं में परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करना।
2. इन्दौर शहर के तंग बस्ती की महिलाओं में परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करना।
3. आदिवासी भील ठाकुर के परिवार में बालको की स्थिति ज्ञात करना।
4. तंग बस्ती के परिवार में बालको की स्थिति ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ

1. बदलते हुए परिवेश में तंग बस्ती की महिलाओं में आदिवासी महिलाओं की अपेक्षा परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता अधिक होगी।
2. आदिवासी भील ठाकुर महिलाओं के परिवारों में स्वीकृत की अपेक्षा उपेक्षित बालक अधिक होगें।
3. तंग बस्ती की महिलाओं के परिवारों में स्वीकृत की अपेक्षा उपेक्षित बालक अधिक होगें।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन का सम्बन्ध ''आदिवासी भील ठाकुर एवं तंग बस्ती की महिलाओं में परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति को जानने के लिए तुलनात्मक अध्ययन'' से है। अतः इसमें उददेश्य पूर्ण दैव निदर्शन विधि एवं प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्श का चुनाव

प्रस्तुत अध्ययन हेतु इन्दौर नगर की तंग बस्तियों की महिलाओं एवं आदिवासी भील ठाकुर महिलाओ को चुना गया है। जिससे आदिवासी भील ठाकुर एवं तंग बस्ती की महिलाओं में परिवार नियोजन की अभिवृत्ति को जाना जा सकें। इसके साथ ही इन्ही परिवारों के बालकों के अभिभावकों द्वारा स्वीकृति एवं उपेक्षितता को जानने का प्रयास किया है।

प्रतिदर्श हेतु इन्दौर शहर की कुछ बस्तियाँ से आदिवासी भील ठाकुर महिलाए 50 एवं तंग बस्ती की महिलायें 50 इस प्रकार कुल 100 महिलाओ का चयन किया गया ।इन्ही आदिवासी भील ठाकुर एवं तंग बस्ती के 50–50 बालक लिये गये अर्थात ये अध्ययन भी 100 बालको पर किया गया।

उपकरण

1. एम. ए. हकीम एवं यशवीर सिंग (1994)परिवार नियोजन अभिवृत्ति मापनी –परीक्षण के आधार पर पारिवारिक नियोजन के प्रति महिलाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया ।
2. जी0 पी0 शैरी एवम् जगदीश चन्द्र सिन्हा (1971), पारिवारिक संबंध सूचि – इस परीक्षण के माध्यम से माता–पिता द्वारा स्वीकृत बालकों एवं माता–पिता द्वारा उपेक्षित बालकों का चयन किया गया ।

परिणाम एवं विश्लेषण

आदिवासी भील ठाकुर एव तंग बस्ती की महिलाएं एवं परिवार नियोजन

आदिवासी भील ठाकुर एवं तंग बस्ती की महिलाओ में परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता से संबंधित परिणामों (तालिका 1) से स्पष्ट है कि आदिवासी भील ठाकुर महिलाओं का माध्य मूल्य 94 है एवं तंग बस्ती की महिलाओं का माध्य मूल्य 105 है ओर ''t'' का मान 4.08 है जो कि स्वतन्त्रता अंश 1/98 के लिए 0.01 के लिए सार्थकता स्तर पर परिकल्पित मूल्य सारणी ''t'' मूल्य से अधिक है। अतः यह उपकल्पना कि बदलते हुए परिवेश में तंग बस्ती की महिलाओं में आदिवासी महिलाओं की अपेक्षा परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता अधिक होगी,सार्थक है।तंग बस्ती महिलाएं शहरी क्षेत्र में रहती है अतः उन पर बदलते परिवेश का प्रभाव आदिवासी भील महिलाओं की अपेक्षा जल्दी होता है वह बदलते सामाजिक परिवर्तन को भी आदिवासी महिलाओं की अपेक्षा जल्दी स्वीकार करती है आदिवासी भील महिलाएं अपनी जाति के संस्कारो के कारण भी नये परिवर्तन को स्वीकार करने में अधिक समय लेती है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-II, November-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

तालिका 1
आदिवासी भील ठाकुर एव ंतंग बस्ती की महिलाएं एवं परिवार नियोजन के प्रति अभिवृति

समूह	पदों की संख्या N	माध्य M	प्रमाप विचलन S.D.	SE diff	t
आदिवासी भील ठाकुर महिलाएँ	50	94	12.62	2.69	4.08 ☆
तंग बस्ती की महिलाएँ	50	105	13.99		

☆ 0.01मूल्य पर सार्थक है।

महिलाओं की अपेक्षा जल्दी होता है। वह बदलते सामाजिक परिवर्तन को भी आदिवासी महिलाओं की अपेक्षा जल्दी स्वीकार करती है आदिवासी भील महिलाएं अपनी जाति के संस्कारो के कारण भी नये परिवर्तन को स्वीकार करने में अधिक समय लेती है

आदिवासी भील ठाकुर एवं तंग बस्ती के बालकों में स्वीकृति/उपेक्षितता

आदिवासी भील ठाकुर एंव तंग बस्ती के परिवारों के बालकों में स्वीकृति एवं उपेक्षितता में सम्बन्ध देखने पर पाया गया कि आादिवासी भील ठाकुर के बालको की स्वीकृति का प्रतिशत 8.5 है (तालिका क्रमांक 2) जबकि इन परिवारो के उपेक्षित बालकों का प्रतिशत 91.4 है। का प्रतिशत 91.4 है। इसी प्रकार तंग बस्ती के परिवारों के बालकों में स्वीकृति प्रतिशत 9.4 है और इन परिवारो में उपेक्षित बालकों का प्रतिशत 90.6 है, अतः यह सारणी दर्शाती है कि आदिवासी भील ठाकुर एवं तंग बस्ती के बालकों में स्वीकृति की अपेक्षा उपेक्षितता अधिक पायी गयी है,अतः यह तथ्य स्पष्ट करते है कि आदिवासी भील ठाकुर एवं तंग बस्ती के परिवारों में बालको में स्वीकृति की अपेक्षा–उपेक्षितता ज्यादा है, अतः यह उपकल्पना सार्थक है।

तालिका 2
आदिवासी भील ठाकुर एवं तंग बस्ती के बालकों में स्वीकृति/उपेक्षितता

समूह	पदो की संख्या	स्वीकृत बालक	उपेक्षित बालक
आदिवासी भील ठाकुर के परिवार	35	8.5%	91.4%
तंग बस्ती के परिवार	32	9.4%	90.6%

प्रस्तुत शोध पत्र के परिणाम स्पष्ट करते है कि आदिवासी भील ठाकुार महिलाओं में परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति अति निम्न है। इन्दौर शहर की तंग बस्तियों में परिवार नियोजन के प्रति अभिवृति आदिवासी भील ठाकुर महिलाओं के अपेक्षा अधिक है। आदिवासी भील ठाकुर परिवार के बालकों में स्वीकृति के अपेक्षा उपेक्षितता अधिक है। तंग बस्ती के परिवारो के बालको में भी स्वीकृति की अपेक्षा उपेक्षितता अधिक है।

अतः इस शोध पत्र के निष्कर्ष से स्पष्ट होता है कि परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति आदिवासी भील ठाकुर महिलाओं की अपेक्षा तंग बस्ती की महिलाओं में ज्यादा पायी गयी है,ओर पारिवारिक सम्बन्धों में आदिवासी भील ठाकुर एवं तंग बस्ती के बालको में स्वीकृति की अपेक्षा उपेक्षिता अधिक पायी गई है।

सन्दर्भ सूची

1. Anand Pyari (1975) Personality characteristics of acceptees and rejectees, unpublished dissertation Agra, University Agra.
2. Das Narayan (1975) An indirect approach to study inter realationship between infant moratality and fetility demograth India (2) : 449-456
3. Ding QJ, Hesketh T. Family size, fertility preferences, and sex ratio in China in the era of the one child family policy: results from national family planning and ealth survey. BMJ. 006;333(7564):371-373.doi: 10.1136/bmj.38775.672662.80. Epub 2006 May 11. [PMC free article] [PubMed] [Cross Ref]
4. Fertility of Men and Women Aged 15–44 Years in the United States. National survey of family growth,2006-2010. http://www.cdc.gov/nchs/data/nhsr/nhsr051.pdf. Accessed on June13, 2012.
5. Mosher WD, Bachrach CA. Understanding U.S. fertility: continuity and change in the National Survey of Family Growth, 1988-1995. Fam Plann Perspect.1996;28(1):4–12.doi: 10.2307/2135956. [PubMed] [Cross Ref]